

लिङ्गाश्टकम्

ब्रह्म मुरारि सुरार्चित लिङ्गम्  
निर्मल भासित शोभित लिङ्गम्  
जन्मज दुहख विनाशक लिङ्गम्  
तत प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम्॥१॥

देव मुनि प्रवरार्चित लिङ्गम्  
काम दहन करुणाकर लिङ्गम्  
रावण दर्प विनाशक लिङ्गम्  
तत प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम्॥२॥

सर्व सुगन्धि सुलेपित लिङ्गम्  
बुद्धि विवर्धन कारण लिङ्गम्  
सिद्ध सुरासुर वन्दित लिङ्गम्  
तत प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम्॥३॥

कनक महामणि भूशित लिङ्गम्  
फणिपति वेशित शोभित लिङ्गम्  
दक्श सुयग्न विनाशन लिङ्गम्  
तत प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम्॥४॥

कुङ्कुम चन्दन लेपित लिङ्गम्  
पङ्कज हार सुशोभित लिङ्गम्  
सन्धित पाप विनाशन लिङ्गम्  
तत प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम्॥५॥

देव गणार्चित सेवित लिंगम  
भावैर भक्तिभिर ऐव च लिंगम  
दिनकर कोटि प्रभाकर लिंगम  
तत प्रणमामि सदाशिव लिंगम॥६॥  
अष्ट दळो परिवेशित लिंगम  
सर्व समुद्भव कारण लिंगम  
अष्ट दरिद्र विनाशन लिंगम  
तत प्रणमामि सदाशिव लिंगम॥७॥  
सुर गुरु सुरवर पूजित लिंगम  
सुरवर पुशप सदारचित लिंगम  
परम परम परमात्मक लिंगम  
तत प्रणमामि सदाशिव लिंगम॥८॥